देवी-देवताओंकी उपासना : शक्ति - खण्ड ३

देवीपूजनका अध्यात्मशास्त्र

(कुमकुमार्चन, आंचलभराई आदि का आधार !)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ एवं अन्य

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रणकी १,००० प्रतियां एवं इस लघुग्रन्थकी अबतक १२,३०० प्रतियां प्रकाशित !

अनुक्रमणिका

卐	प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें !	७
卐	भूमिका	९
१.	देवीपूजन के कुछ सामान्य कृत्य एवं उनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार	११
२.	गौरी तृतीया (चैत्र शुक्ल तृतीया) पर किया जानेवाला देवीपूजन	३०
३.	हरितालिका (भाद्रपद शुक्ल तृतीया) पर किया जानेवाला देवीपूजन	३२
४.	नवरात्रिमें देवी-उपासनाका अध्यात्मशास्त्रीय आधार	३३
५.	विजयादशमी (दशहरे)पर देवीपूजन	४८
६.	कार्तिक अमावस्या (दीपावलीकी अमावस्या)पर लक्ष्मीपूजन	५१

पढें : सनातन का लघुग्रन्थ 'श्री गणपति'

भूमिका

बंगालकी श्री महाकाली, गुजरातकी श्री अंबामाता, महाराष्ट्रकी श्री महालक्ष्मीदेवी... ये सर्व देवियां अर्थात आदिशक्ति श्री दुर्गादेवीके कार्यानुमेय अवतरित रूप । उसी प्रकार, जैसे श्रीराम एवं श्रीकृष्ण श्रीविष्णुके रूप हैं । इस कारण सर्व देवीरूपोंके पूजनसे सम्बन्धित सामान्य कृत्य एक समान हैं । प्रस्तुत लघुग्रन्थमें ऐसे कृत्योंका, साथ ही त्योहार, उत्सव इत्यादि प्रसंगोंमें किए जानेवाले देवीपूजनसे सम्बन्धित विशिष्ट कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र दिया है ।

देवतापूजन अन्तर्गत कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र समझ लेनेसे, उनका महत्त्व स्पष्ट होकर पूजन अधिक श्रद्धासे होता है । श्रद्धाद्वारा ही भावका उद्‌गम होता है और भावपूर्ण कृत्यके कारण, देवतातत्त्वका लाभ अधिक होता है । देवीपूजनके कृत्य अध्यात्मशास्त्र की दृष्टिसे उचित पद्धति से करनेपर उससे सम्भावित फल अधिक मिलता है । इस उद्देश्यको ध्यानमें रखते हुए, इस लघुग्रन्थमें देवीपूजनके कृत्योंकी अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणसे उचित जानकारी दी है ।

देवीके विविध रूपोंको कौनसे फूल एवं क्यों चढाएं, देवीकी आरती कैसे करें, गौरी तृतीया एवं हरितालिकाकी तिथियोंपर देवीपूजनसे क्या लाभ होता है, नवरात्रिमें घटस्थापना, अखण्ड दीपप्रज्वलन, कुमारिका-पूजन इत्यादि कृत्योंका क्या महत्त्व है, ऐसे विविध विषयोंपर नवीन एवं सूक्ष्म स्तरका अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान इस लघुग्रन्थमें दिया है।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थसे देवीपूजनका शास्त्र समझकर कृत्य करनेवालेको देवीके कृपाशीर्वाद शीघ्र प्राप्त हों । - **संकलनकर्ता**

'धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाकी भूमिका 'पूजासामग्रीका महत्त्व' ग्रन्थमें दी गई है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको पहले सूक्ष्म विश्वके एक विद्वान अथवा गुरुतत्त्व के माध्यमसे ज्ञान मिलता था ।